2015

AUG-SEP

# Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)

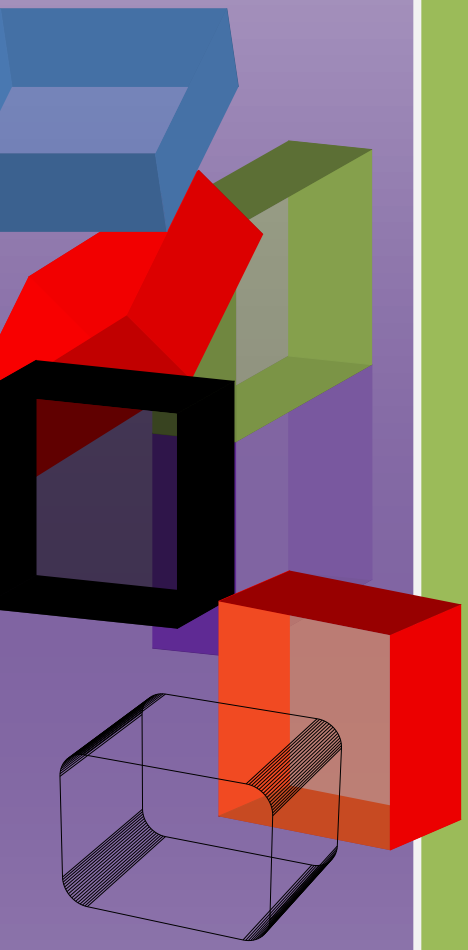

## (Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Impact factor: 2.125

V O L – I V  I s s u e s : V

**Chief-Editor:**

**Ubale Amol Baban**

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Vol No IV Issues V
AUGUST-SEP 2015 ISSN 2278-5655

# स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विषयवस्तु विश्लेषण

**हेमलता फौजदार (शोधार्थी)**
निर्देशिका - प्रो. रीटा अरोड़ा
(पूर्व विभागाध्यक्ष),
शिक्षा विभाग राजस्थान विश्व विद्यालय, जयपुर

**संक्षेपण:-**

*पाठ्यपुस्तकें सम्पूर्ण शिक्षण प्रणाली का आधार स्तम्भ हैं । राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 2005 ने सुझाव दिये कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें ऐसी हों जो जिज्ञासा जगाएँ, आगे अध्ययन के द्वार खोलें । पाठ्यपुस्तकों में महज शब्द आधारित पाठ के स्थान पर रचनात्मक साहित्य, अखबारी कतरनें, चित्र, पोस्टर, कार्टून, मानचित्र, आरेख जैसे ज्ञान के विभिन्न संसाधनों का रचनात्मक उपयोग हो । इसलिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पाठ्यपुस्तक निर्धारण समिति द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की विभिन्न विधाओं को विषयवस्तु का अभिन्न अंग बनाया गया । पाठ्यपुस्तक में उपलब्ध विवरणों को पूर्णता के साथ चित्रित किया गया है । पाठ्यपुस्तक बच्चों के सीखने की शैली को तवज्जो देती है । पाठ्यपुस्तक में चित्रों की चार प्रकार की विधाएँ- तस्वीर, मानचित्र, चित्र तथा रेखाचित्र पाई गयी । पाठ्यपुस्तक में तस्वीरों तथा रंगीन चित्रों की विधाओं की अधिकता पायी गई । चित्रों की विधाओं में पुरुष पात्रों का प्रदर्शन स्त्री पात्रों के प्रदर्शन की अपेक्षा अधिक पाया गया । पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित चित्रों में लैंगिक समानता का प्रदर्शन नहीं पाया गया ।*

मानव ही ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठाता है । मानवीय ज्ञान का संचय पुस्तकों के रूप में होता है। शिक्षण - प्रक्रिया में पुस्तकों की उपयोगिता अपरिहार्य है । शिक्षा जगत ने सर्वमान्य रूप से पाठ्यपुस्तकों को

सीखने - सिखाने के साधन के रूप में स्वीकार किया है । पाठ्यपुस्तकें सम्पूर्ण शिक्षण प्रणाली का आधार स्तम्भ हैं । पाठ्यपुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो कि विद्यार्थी को स्वतंत्र अध्येता के रूप में विकसित करने में सहायक हो । ऐसी पाठ्यपुस्तकें तैयार करना एक चुनौती भरी किन्तु अनिवार्य कार्यवाही है। स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्र- भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान हैं । इन सुपरिचित क्षेत्रों में से सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत समाज के विविध सरोकार आते हैं । इनकी अंतर्वस्तु बहुत विविध है जिसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानवविज्ञान जैसे विषयों की विषयवस्तु समाहित की जाती है । इतिहास सामाजिक विज्ञान की महत्वपूर्ण **विद्या** है । 2005 से पूर्व निर्मित इतिहास की पाठ्यपुस्तकें मात्र सूचनाओं का केंद्र मानी जाती थी। इनके **द्वारा विद्यार्थियों** के मस्तिष्क में तथ्यों का अंबार लगाया जाता था । जिससे **विद्यार्थियों** पर पाठ्यचर्या का बोझ बढ़ गया और स्कूली पढ़ाई बाल्यावस्था व किशोरावस्था के निर्माणात्मक वर्षों में उनके शरीर व मस्तिष्क पर तनाव का स्रोत बन गई, इसलिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने ' शिक्षा बिना बोझ के '(1993) की रिपोर्ट की अनुशंसाओं के आधार पर स्कूली पाठ्यचर्या के सुपरिचित क्षेत्र सामाजिक विज्ञान में महत्वपूर्ण परिवर्तन के सुझाव दिये । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने सुझाव दिये कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें ऐसी हों जो जिज्ञासा जगाएँ, आगे अध्ययन के **द्वार** खोलें । पाठ्यपुस्तकों में महज शब्द आधारित पाठ के स्थान पर रचनात्मक साहित्य, अखबारी कतरनें, चित्र, पोस्टर, कार्टून, मानचित्र, आरेख जैसे ज्ञान के विभिन्न संसाधनों का रचनात्मक उपयोग हो । इसलिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पाठ्यपुस्तक निर्धारण समिति **द्वारा** निर्मित पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की विभिन्न विधाओं को

विषयवस्तु का अभिन्न अंग बनाया गया । सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का समावेश करने के **द्वारा विद्यार्थियों** को एक आलोचनात्मक दूरबीन थमाने की कोशिश की गई है ताकि अतीत के खास क्षणों को **विद्यार्थियों** के समक्ष लाया जा सके । अन्य विषयों की अपेक्षा इतिहास-शिक्षण में इनका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि इतिहास भूतकाल से सबंद्द होता है । भूतकाल प्राय: अस्पष्ट, धूमिल एवं अमूर्त होने के कारण अपने प्रस्तुतीकरण हेतु उपयुक्त कारणों की अपेक्षा रखता है जिनके माध्यम से वह मूर्त एवं सजीव होकर शिक्षार्थी के लिए सरल, रोचक व बोधगम्य हो सके । **विद्यार्थियों** में भूतकाल के विषय में सजीवता की इस अनुभूति को जागृत एवं विकसित करने में चित्रों की विधाएँ एक विशिष्ट भूमिका निभाती हैं । चित्र **विद्यार्थियों** में विचारोत्तेचना उत्पन्न करते हैं, चित्र **विद्यार्थियों** को बने-बनाये जवाब देने के बजाय उन्हे स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि **विद्यार्थी** अपने नतीजों पर स्वयं पहुँच सकें तथा अर्थपूर्ण अधिगम कर सकें । **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005** अनुसंशा करती है कि पाठ्यपुस्तकों को लेकर अभिभावक, शिक्षक और नागरिक समूहों में चर्चा को बढ़ावा देना चाहिए तथा विश्व**विद्यालयों** को पाठ्यपुस्तकों पर शोध अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि स्कूली ज्ञान को लेकर नियमित शोध आधारित जानकारी मौजूद रहे । पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त विषयवस्तु, चित्रों, मानचित्र, कार्टूनों के प्रस्तुतीकरण को लेकर असंतोष व्यक्त होता रहा है जैसे - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् **द्वारा** प्रकाशित कक्षा XI की राजनीतिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक "भारत का संविधान: सिद्धांत व्यवहार" में शंकर पिल्लई **द्वारा** निर्मित अंबेडकर के कार्टून को सम्मिलित करने पर विवाद उत्पन्न हुआ । इसमे अंबेडकर को एक घोंघे पर बैठे हुए दिखाया गया एवं उनके पीछे जवाहरलाल नेहरू को

चाबुक फटकारते हुए चित्रित किया गया । कार्टून द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया कि संविधान का काम धीमी गति से चल रहा है । इस कार्टून को अंबेडकर की छवि पर आघात और दलितों का अपमान माना गया । इसे आपत्तिजनक मानते हुए पाठ्यपुस्तक से हटा देने का प्रस्ताव दिया गया ।

2013 में महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड की X वीं कक्षा की भूगोल की पाठ्यपुस्तक में समावेशित मानचित्र भी विवाद का कारण बना । पिछले कई दशकों से भारत-चीन के मध्य अरुणाचल प्रदेश को लेकर सीमा विवाद रहा है । इस पाठ्यपुस्तक में भारत और उसके पड़ोसी देश अध्याय में भारत के मानचित्र में अरुणाचल प्रदेश को प्रदर्शित न करके, उसे चीन के एक हिस्से के रूप में प्रदर्शित करने पर विवाद उत्पन्न हुआ । यह मुद्दा संसद में भी उठाया गया । इसलिए शोधकर्त्री ने इस क्षेत्र में शोधकार्य करने का निर्णय किया ।

## समस्या कथन

स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विषयवस्तु विश्लेषण

## शोध समस्या के उद्देश्य

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के मुख पृष्ठ व पार्श्व पृष्ठ पर निर्मित चित्र का विषय से सम्बंध का अध्ययन ।
- स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों की स्पष्टता का अध्ययन ।

- स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का विषयवस्तु से सम्बंध का अध्ययन ।
- स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की सार्थकता का अध्ययन ।
- स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में रंगीन, काले सफ़ेद चित्रों और मानचित्रों का संख्यात्मक अध्ययन ।
- स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के चित्रों में स्त्री व पुरुष पात्रों के प्रदर्शन का संख्यात्मक प्रतिनिधित्व का अध्ययन ।
- उच्च प्राथमिक स्तर की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों के **द्वारा** समय विशेष की सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक पृष्ठभूमि के बोध का अध्ययन ।

## शोध प्रारूप

### शोध विधि

शोधकार्य में विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया । विषयवस्तु विश्लेषण संचार की प्रत्यक्ष सामाग्री के विश्लेषण से संबन्धित शोध की एक विधि है । संचार सामग्री शाब्दिक या अशाब्दिक सम्प्रेषण के रूप में होती है जैसे भाषण, पुस्तक, पत्र, डायरी, लेख, नारे, फिल्म, संगीत, चित्र, कार्टून आदि । संचार सामग्री गुणात्मक रूप में होती है । विषयवस्तु विश्लेषण **द्वारा** ऐसे संरचना विहीन, गुणात्मक आंकड़ों के वर्गीकरण तथा परिमाणन **द्वारा** वैज्ञानिक तथ्यों में इस प्रकार परिवर्तित किया जाता है जिससे वे अधिक अर्थ पूर्ण हो सकें तथा शोध उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकें।

**समग्र** राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की उच्च प्राथमिक स्तर की सामाजिक विज्ञान की पुस्तकें ।

**न्यादर्श**

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तकें

**न्यादर्श चयन विधि**

सोद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया ।

**उपकरण**

शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा पाठ्यपुस्तक में चित्रों के विश्लेषण करने के लिए मूल्यांकन उपकरण का निर्माण किया गया । इस मूल्यांकन उपकरण का निर्माण राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के महिला अध्ययन विभाग, नई दिल्ली द्वारा 2010-11 में विकसित "लिंग परिपेक्ष्य में पाठ्यपुस्तक विश्लेषण के लिए मूल्यांकन उपकरण" के आधार पर, विशेषज्ञों की राय और शोधकार्य के उद्देश्यों के अनुरूप किया गया ।

## तथ्यों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विश्लेषण तालिका-1

| अध्यायों की क्रम संख्या | कुल चित्रों की संख्या | स्पष्ट चित्रों की संख्या | अस्पष्ट चित्रों की संख्या | विषयवस्तु से संबन्धित चित्रों की संख्या | विषयवस्तु से असंबन्धित चित्रों की संख्या | सार्थक चित्रों की संख्या | असार्थक चित्रों की संख्या | चित्रों की विधाओं की कुल संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1** | 8 | 8 | 0 | 7 | 1 | 8 | 0 | 3 |
| **2** | 13 | 12 | 1 | 13 | 0 | 13 | 0 | 3 |
| **3** | 8 | 7 | 1 | 8 | 0 | 8 | 0 | 3 |
| **4** | 19 | 19 | 0 | 19 | 0 | 19 | 0 | 2 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **5** | 7 | 7 | 0 | 7 | 0 | 7 | 0 | 1 |
| **6** | 4 | 4 | 0 | 3 | 1 | 4 | 0 | 2 |
| **7** | 3 | 3 | 0 | 3 | 0 | 3 | 0 | 1 |
| **8** | 6 | 5 | 1 | 6 | 0 | 6 | 0 | 3 |
| **8-9 (पृष्ठ 84-85)** | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 |
| **8-9 (पृष्ठ 86)** | 4 | 4 | 0 | 4 | 0 | 4 | 0 | 1 |
| **9** | 11 | 11 | 0 | 11 | 0 | 11 | 0 | 2 |
| **10** | 6 | 6 | 0 | 6 | 0 | 6 | 0 | 1 |
| **11** | 4 | 4 | 0 | 4 | 0 | 4 | 0 | 2 |
| **12** | 12 | 10 | 2 | 12 | 0 | 12 | 0 | 1 |
| **अंतिम पृष्ठ** | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 |
| **योग** | 107 | 102 | 5 | 105 | 2 | 107 | 0 | 27 |

## स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विश्लेषण तालिका-2

| अध्यायों की क्रम संख्या | चित्रों की विधाओं की संख्या | | | | रंगीन चित्रों की संख्या | काले-सफ़ेद चित्रों की संख्या | चित्रों में पुरुष पात्रों की संख्या | चित्रों में स्त्री पात्रों की संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | तस्वीर | मानचित्र | चित्र | रेखाचित्र | | | | |
| **1** | 6 | 1 | 1 | 0 | 7 | 1 | 0 | 1 |
| **2** | 8 | 1 | 4 | 0 | 9 | 4 | 1 | 0 |
| **3** | 5 | 0 | 2 | 1 | 5 | 3 | 0 | 1 |
| **4** | 18 | 1 | 0 | 0 | 15 | 4 | 2 | 0 |
| **5** | 7 | 0 | 0 | 0 | 3 | 4 | 0 | 1 |
| **6** | 3 | 1 | 0 | 0 | 2 | 2 | 1 | 0 |
| **7** | 3 | 0 | 0 | 0 | 1 | 2 | 0 | 1 |
| **8** | 4 | 1 | 1 | 0 | 4 | 2 | 0 | 1 |
| **8-9 (पृष्ठ 84-85)** | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8-9 (पृष्ठ 86) | 4 | 0 | 0 | 0 | 4 | 0 | 2 | 0 |
| 9 | 8 | 0 | 3 | 0 | 7 | 4 | 2 | 0 |
| 10 | 6 | 0 | 0 | 0 | 3 | 3 | 2 | 2 |
| 11 | 3 | 1 | 0 | 0 | 4 | 0 | 3 | 0 |
| 12 | 12 | 0 | 0 | 0 | 10 | 2 | 1 | 1 |
| अंतिम पृष्ठ | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 |
| योग | 87 | 8 | 11 | 1 | 76 | 31 | 14 | 8 |

## स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विश्लेषण तालिका-3

| अध्यायों की क्रम संख्या | अध्यायों में समावेशित चित्रों द्वारा समय विशेष की पृष्ठभूमि का बोध कराने में सहायक अध्याय | | |
|---|---|---|---|
| | सामाजिक पृष्ठभूमि का बोध | आर्थिक पृष्ठभूमि का बोध | भौगोलिक पृष्ठभूमि का बोध |
| 1 | √ | √ | √ |
| 2 | √ | √ | √ |
| 3 | √ | √ | √ |
| 4 | √ | √ | √ |
| 5 | √ | √ | √ |
| 6 | √ | × | √ |
| 7 | √ | × | √ |
| 8 | √ | × | √ |
| 8-9 (पृष्ठ 84-85) | × | √ | √ |
| 8-9 (पृष्ठ 86) | √ | √ | × |
| 9 | √ | √ | × |
| 10 | √ | × | √ |
| 11 | √ | √ | √ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 12 | √ | √ | √ |
| अंतिम पृष्ठ | × | × | √ |
| योग | 13 | 10 | 13 |

**स्तर VI की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विश्लेषण का लेखाचित्र:**

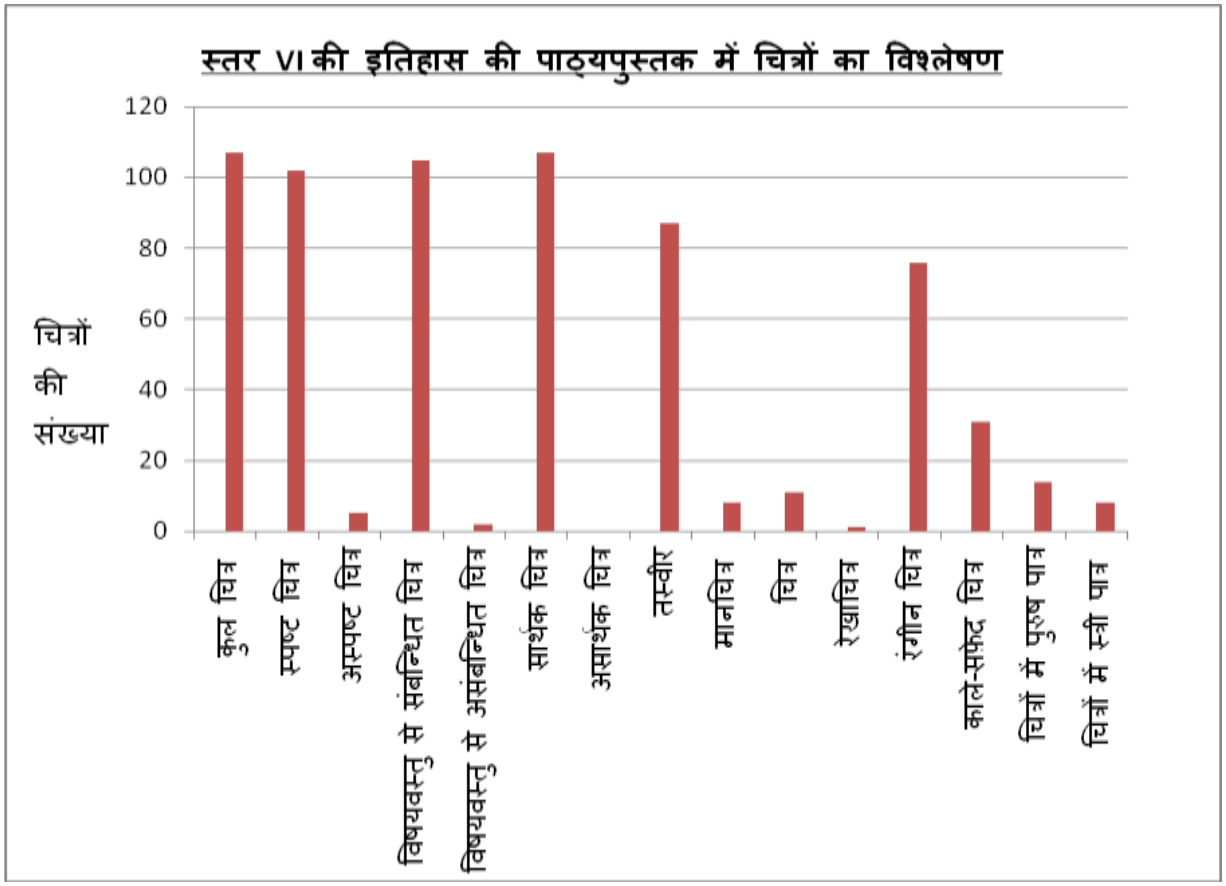


**स्तर VI की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों के विषयवस्तु विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष :**

- पाठ्यपुस्तक के मुख पृष्ठ पर निर्मित साँची के स्तूप का एक मूर्ति चित्र, ताड़पत्रों से बनी पाण्डुलिपि के एक पृष्ठ का चित्र, प्राचीन चाँदी के सिक्के का चित्र तथा पार्श्व पृष्ठ पर निर्मित तटवर्ती मंदिर, महाबलिपुरम का चित्र विषय से स्पष्ट संबंध प्रदर्शित कर रहे हैं । इतिहास मानव की भूतकालीन सभ्यता एवं संस्कृति का चित्रण

प्रस्तुत करता है । मुख पृष्ठ तथा पार्श्व पृष्ठ पर निर्मित चित्र अतीत की रोमांचक यात्रा का स्पष्ट चित्रण प्रदर्शित करते है ।

- मुख पृष्ठ के भीतरी पृष्ठ पर निर्मित साँची के स्तूप का चित्र अतीत से संबन्धित होने के कारण विषय से स्पष्ट संबंध प्रदर्शित करता है । लेकिन पार्श्व पृष्ठ के भीतरी पृष्ठ पर निर्मित जगदीश चंद्रिकेश की राजा रवि वर्मा पुस्तक के मुख पृष्ठ पर निर्मित एक स्त्री पात्र का चित्र विषय से स्पष्ट संबंध प्रदर्शित नहीं करता है । भीतरी पृष्ठ पर निर्मित चित्र का प्रदर्शन बाल साहित्य के प्रोत्साहन तथा विद्यार्थियों को इन बाल साहित्यों के अध्ययन के लिए उत्प्रेरित करने के माध्यम के रूप में प्रतीत हो रहा है ।
- पाठ्यपुस्तक में 107 चित्र उपस्थित हैं । पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों में 95.33% चित्रों का प्रदर्शन स्पष्ट है । स्पष्ट चित्रों में उचित रंगों, उपयुक्त आकार तथा छपाई की सीमाओं का ध्यान रखा गया है । स्पष्ट चित्र इतिहास की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जिससे शिक्षार्थी इतिहास की बेहतर समझ विकसित कर सकते हैं । पाठ्यपुस्तक में 4.67% चित्रों का प्रदर्शन अस्पष्ट पाया गया । चित्रों में अत्यधिक गहरे रंगों के प्रयोग, कालेपन तथा छपाई की सीमाओं का ध्यान न रखने के कारण अस्पष्टता पायी गयी है । अस्पष्ट चित्र विद्यार्थियों की इतिहास के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने में असमर्थ रहते हैं ।
- पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों में से 98.13% चित्रों का विषयवस्तु से स्पष्ट संबंध प्रदर्शित हो रहा है । वे पुस्तक में प्रस्तुत चर्चा के अभिन्न अंग हैं तथा चर्चा को आगे बढ़ाने में सहायक हैं । विषयवस्तु से संबन्धित चित्र इतिहास की बुनियादी अवधारणाओं के विकास में सहायक होते हैं । लेकिन 1.87% चित्र विषयवस्तु से स्पष्ट संबंध प्रदर्शित नहीं कर रहे हैं । विषयवस्तु से असम्बन्धित चित्र विषयवस्तु के स्पष्टीकरण, चित्रण प्रस्तुत करने में असमर्थ होते हैं ।

- पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों में 100% चित्रों का प्रदर्शन सार्थक पाया गया । पाठ्यपुस्तक में समवेशित चित्रों को सजावटी सामग्री या रिक्त स्थान की पूर्ति के रूप में प्रयोग में नहीं लाया गया है । पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु के संदर्भ एवं विषयवस्तु की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर चित्रों की विभिन्न विधाओं का समावेश किया गया है ।

- पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों में चित्रों की 4 प्रकार की विधाओं- तस्वीर, मानचित्र, चित्र तथा रेखाचित्र का प्रयोग किया गया है । चित्रों की विधाओं में 81.31% तस्वीरों, 7.48% मानचित्रों, 10.28% चित्रों एवं 0.93% रेखाचित्रों का प्रयोग किया गया है । पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की विधाओं में तस्वीरों की अधिकता पायी गयी । तस्वीरें शिक्षार्थी के समक्ष इतिहास की घटनाओं को वास्तविक तथा सजीव रुप में प्रदर्शित करती हैं ।
- पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों में 71.03% रंगीन चित्रों की विधाओं तथा 28.97% काले-सफ़ेद चित्रों की विधाओं का प्रदर्शन पाया गया । पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की विधाओं में रंगीन चित्रों की अधिकता पायी गयी । रंगीन चित्रों की विधाएँ पाठ्यपुस्तक को आकर्षक तथा रोचक बनाती हैं ।
- पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों में स्त्री व पुरुष पात्रों के प्रदर्शन में 63.64% पुरुष पात्रों का तथा 36.36% स्त्री पात्रों का प्रदर्शन पाया गया । चित्रों में पुरुष पात्रों के प्रदर्शन का संख्यात्मक प्रतिनिधित्व पाया गया । पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्र लैंगिक समानता का प्रदर्शन नहीं करते हैं । पूर्व में हुए शोध भी इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों में लैंगिक विभेद की उपस्थिती के प्रमाण देते हैं । Schocker, Jessica B. ; Woyshner, Christine (2013) द्वारा अमेरिका में प्रयोग की जा रही इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में उपस्थित चित्रों पर किए गए शोध के निष्कर्ष प्रदर्शित करते हैं कि इतिहास की पाठ्यपुस्तक के चित्रों में लैंगिक विभेद

पाया गया । अमेरिका में प्रयोग की जा रही इतिहास की पाठ्यपुस्तक में पुरुषों के चित्रों का प्रतिनिधित्व था तथा स्त्रियों के चित्रों का प्रतिनिधित्व 15% से भी कम था ।

- पाठ्यपुस्तक में उपस्थित अध्यायों में समावेशित चित्र समय विशेष की सामाजिक, आर्थिक तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि का बोध कराने में सहायक हैं । 86.66% अध्यायों के चित्र सामाजिक, 66.66% अध्यायों के चित्र आर्थिक एवं 86.66% अध्यायों के चित्र भौगोलिक पृष्ठभूमि का बोध करने में सहायक पाये गए हैं ।

**संदर्भ ग्रंथ:**


- पुष्कर, पंकज. (2012, जुलाई-अक्टूबर) भारतीय संसद में हुई बहस. *शिक्षा विमर्श, 14(4-5)*, 9-23
- बनर्जी, सुष्मिता. (2007, जनवरी-फरवरी). पूर्वागृहों से भरी राजस्थान की पाठ्यपुस्तकें. *शिक्षा विमर्श, 9(1)*, (36-41)
- Arunachal 'missing' from Maharshtra board textbooks! Retrieved from http://www.rediff.com/newses/report
- Singh, Y.K. (2004). TEACHING OF SOCIAL STUDIES. New Delhi : APH Publishing corporation.
- National Curriculum framework(2005). New Delhi : National Council of Educational Research and Training.
- Mangaleswaram, R. (2011). Paradigms in Social Science Rearch A New Horizon. New Delhi : Authors Publication.
- Shashtri, V.K. (2008). Research Methodology in Education. New Delhi : Authors Press Publication.